F-5

D.El.Ed-1st year

इकाई-III

Date:-05.05.20

Topic:- बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता और भाषायी ज्ञान की समझ

बच्चों के साथ की जाने वाली बातचीत को यदि रिकार्ड कर लिया जाए और उसका गहन विश्लेषण किया जाए तो यह स्पष्ट देखा जा सकता है कि बच्चों मे भाषा सीखने की असीम संभावनाऐं होती है। वे अपने परिवेश की भाषा को सहज रुप से आत्मसात कर उसका सृजनात्मक प्रयोग करते है। ब्रिटेन (2006) बच्चों की भाषायी क्षमता के बारे मे कहते है कि प्रत्येक बच्चा उस भाषा को जिस परिवेश मे वह बड़ा होता है, विश्लेषण करता है और उसकी आंतरिक गुप्त संरचना निकाल लेता है। वह गुप्त संरचना इतनी सामान्य होती है कि वह बच्चा आजीवन इसका प्रयोग भी करता है। वह अर्थीय और वाक्यीय दोनो प्रकार की होती है। भाषा अधिगम मे गुप्त संरचना की खोज सबसे महत्वपूर्ण और अबोधगम्य प्रक्रिया है। बच्चा जिस तंत्र का उपयोग करता है उसकी व्याख्या करना, उसका विवरण देना, उसका व्याकरण लिखना होगा। जैसा कि हम सब जानते ही है, वह युवाओं को भी परेशान करने वाली प्रक्रिया है। हम जिस प्रक्रिया की चर्चा कर रहे है, उसके परिणामस्वरुप बच्चा यह तो जानता है कि शब्दों के साथ कैसे खेला जाए, खिलवाड़ किया जाए, पर यह नही जानता है 'वह क्या कर रहा है?

जब वह लोगों को बातचीत करते सुनता है तो वह जो कुछ भी सुनता है निश्चित तौर पर उससे कुछ अधिक ग्रहण करता है। वह उच्चारणों/अभिव्यक्तियो के सामान्य रुपों (फार्म्स) को ऐसे रुप मे ग्रहण करता है कि क्या किस शब्द के पहले और क्या बाद मे आता है, अर्थात शब्द कोटियो की परस्पर व्यवस्था करने का ~~(व्याकरणिक ज्ञान) न होते हुए भी~~ तात्पर्य यह है कि बच्चों मे भाषा सीखने की क्षमता होती है और साथ ही वे भाषा की व्याकरणिक कोटियो का सचेत ज्ञान (व्याकरणिक ज्ञान) न होते हुए भी संदर्भ के अनुसार भाषा का सार्थक प्रयोग करने की क्षमता ~~रखते है~~ रखते है।

END

Scanned with CamScanner